शंकर भांडारी

मैं कुवारा ही क्यों रहा!

मैं अभी तक कुवारा कबी रहा? इस प्रश्न का उत्तर जितना आसान लगता है, उतना ही नहीं। मैं आज तक कुवारा रहा या गया था, यह बताना भी जरा मुश्किल है। लेकिन विनोद से मैं कभी-कभी कहता हूँ — ‘मेरी पत्नी की शादी अभी तक नहीं हुई है।’ इस बात पर आप कहेंगे अरे! इस बुद्धे की अभी भी शादी की सूचना है! तो डरकस्वा हो भी तो इस में क्या आवश्यकता? विख्यात ने मुझे ही निम्नांकन से ही पुरुष-सी, आदमी-औरत और लड़का-लड़की आदि की कुछ ऐसी व्यवस्था की है। तो है! मुझे के नियम के सुविधाय संग से चलाने के लिए यह व्यवस्था उचित भी है। मुझे ऐसा नहीं लगता कि कोई ऐसी व्यवस्था के विरोध में है। पर, यहाँ तो प्रश्न विवाह संस्था का है। वीरबह आने के बाद लड़के-लड़की की इस संस्था में अपने आप को उत्तर कर अटल करों को हमेशा ही करते रहना है क्या?

युप्रसिद्ध लेखक बेकर आपने ‘विवाह और एकांत जीवन’ में लिखा है — ‘जब ने पत्नी और बच्चे किये है वह स्वयं अपनी किस्मत के लिए उत्तरदायी है।’ यह क्योंकि इन दोनों प्रसंगों का अर्थ यही है कि हम ने कुछ क्रिस्टियन में करता चाहते हैं कर नहीं पाते बर्तन अपने अंकलेश्वर के प्रस्ताव के विपरीत करते रहना है कि ‘विवाह की पालनी पर चढ़ना आदमी के नसीब में लिखा ही है।’ यह युवा कर मुझे प्रसन्नता हुई कि मैं इस विषय से मुक्त रहा।

दरअसल मैं कुवारा रह गया ऐसा कहना उचित नहीं होगा। इस संस्था में मैं अब से शूद्र तो बोल सकता हूँ लेकिन अपने आप को घोषित नहीं दे सकता। मेरा जन्म ब्राह्मण कुल के संस्कृत परिवार के साथ गुरु एवं सी में मुझे जो यहाँ कोचियों के बाद विवाह, तद्पर्वत गर्भधारण, और उस द्वारा और कुछ... ये सब गर्भधारण में स्वर रहने की भौतिकता आते हैं। हरिद्वार के कोठार समाप्त होने के बाद देवताओं को नैदेशिक दिखाया जाता है, उसे से सवाल ही प्रसाद का दोनों हाथ में आ जाता है, उसी कर हर जी प्रसाद लेकर होने के बाद देवताओं को नैदेशिक दिखाया जाता है, उसे से नवजन्ता कर दिया?

मेरे पर जो पूर्वों की दुकान थी। उस के से जेट हस्त का गुड़ मिलते है और नारियल का बगीचा था। विनोद भी भेंगी आए, उन को अगर का माल खिलाने में दिक्कत नहीं थी। टूर्से विश्वस्त के समय भी मैं ने बिना पाप के चीनी खाई और मिठाई का तेल जलाया है! इस समय इस प्रकार का भारी केस दर्दनाक आधिकारियों को ही हस्तिन होता था। कहने का मतलब यह है कि यह मेरे से किसी भी अपनी जाति की राय कर उसे लड़की के बाप के नजर मुझ मैं भूमिका में स्वतंत्र हुए लड़के पर पड़ती है इस में आवश्यकता क्या? (उस समय में मैं भूमिका है! और वह भी आखिरी।) उसे के बाद एम.एस.श्री.ई. के एंट्रेस।

लेकिन हमारे पूर्वों के मन में मेरे संगीत में कुछ और अपेक्षाएँ थी। उन सभी लोगों की शिक्षा पोतागी, में हुई थी। वे सभी सच पूछे तो सरकारी नौकरी होने वाले थे, फिर पोतागी...
कल में सरकारी नौकर की पिटार... घर में चार नारियल फूड़े देते वाले से भी कम थी। इसलिए उन्होंने अपनी दुकान ही संभाली और अपने व्यापार को हिसाब से ज्यादा बढ़ाया। (मैं ने हिसाब से बाहर इस्लिए कहा कि उन्होंने कभी हिसाब लिखा ही नहीं।) इसलिए उन की बुद्धि में यह बिचार आया कि अपने बुद्धिमान बंधुओं को परदेस भेज कर व्यापार-विवाहक शिश्ना में नियुक्त होने का मौका देना चाहिए। इस विचारधारा के अनुसार मुझे मुंबई के पोदार कॉलेज ऑफ़ कॉर्पस में भेज दिया गया। सही में मेरा जम्मू दुकानदार के घर में हुआ था लेकिन मेरी प्रकृति दुकानदार की नहीं थी। आश्चर्यकार मेरी कॉलेज की शिक्षा निर्धारित हो गई। अब तो ज्यादातर लड़कियाँ कॉर्पस के लिए जाती हैं। तब पासी को छोड़ और कोई नहीं जाती थी। हम सात-आठ छाता गोवावासी थे। जैसे रेगिस्तान में पत्ती का एक छोटा-सा तालाब दिखाई देता है, वैसे ही हमारी जगज में एक खुबसूरत लड़की दिखी जिस का नाच-गाँव पता नहीं था। मैं ने इस चुनौती को स्वीकार कर सभी गोवावासी दोस्तों को एक महुआ आक्रामक भक्का दिया। उन्होंने दिन शाम को कोलेज के समीप वाले होटल में हम लोगोंने मसाला-डंगो खाया। वह लड़की मंगलपूर्वक, देखने में खुशबू, एवं प्रथम प्रमाण द्वारा सहज प्राप्त होने वाली लगती थी। लेकिन जब उस ने अपने घर की कक्षी सुनाई कि उस के लिए एक जवाब लड़की के साथ दूसरी शादी कर लो तो उस ने पत्र का चुनौति के चुंबन से छुड़ाने के उद्देश्य में ही मेरे कर्मवाद का प्रथम वर्ष समाप्त हो गया। अब उस घटना की याद दिलाने पर वह बेचारी अभिभूत हो जाती है। और मुझे अक्सर रहने के लिए आत्मसंतोष की अपूर्वीति होती है।

फहमी ही बार में अपनी हिम्मत के कारण जीत गया, इस का कारण यह है कि डॉ॰ जुआन नाटक में बायर्न ने कहा कहां वह नहीं अंजी तरह यहाँ था — "डॉ॰ सिकस टाइम्स विद द सेम सिंगल लेखी, एंड यू मै गेट द बॉडिंग ड्रेस्सेज रेडी।" इस का मतलब यह है कि एक लड़की से लगातार छह छह बार बात करके तुम रहनी को जूते स्विंगर के लिए दे देकर हो! यह इतने एक बार दूसरी बात में ने फहमी ही कहां है कि मैं संयुक्त परिवार में बड़ा हुआ और मेरे यहाँ सोने-संबंधियों का आना-जाना लगा रहता था। हमारे सभी के कुछ लड़कियाँ मरहमीशाला सीखने के कारण हमारे यहाँ ही रहती थीं। इसलिए जवाब लड़कियाँ को देखने के लिए मेरी नज़र भूखी नहीं थी। लड़कियों को भी मेरी नज़र में जो पारदर्शित चाहिए थी वह देखिया दे रही थी। कॉलेज का ठोकरा होने के बाद मैं ने तरह-तरह की नौकरियाँ पकड़ी। जिस सहजता से मुझे मुंबई में नौकरियाँ मिलती गईं, उसी सहजता से मैं ने बारह छोड़ता भी गया। यह जब भी मेरा दिल गोवा आने का चाहता तब मैं जम्मू नौकरी छोड़ कर आ जाता और एक-दो महीने इस्पहार-उधार रहने के बाद जब मैं वापस मुंबई जाता तब दूसरी नौकरी स्वयं मेरे लिए मेरा इंतजार करती मिलती थी। जब जब मैं यह कहता हूँ तो पतल भर के लिए आप को अतिशयोक्ति लाने की सम्भावना हो सकती है। 1948 से 1961 के बीच मैं ने कम-से-कम छह-सात नौकरियों की और कार्यालय के काम से अधिक संसार के में रूपले डूबने लगा। इस के उपरांत कोई भी शांति गोवा की स्मृति और इस क्षेत्र में कार्य करने वाले गोवा वालों की भिन्नता में मेरा ब्रह्म कैसे गुज़र जाता था यह मेरी समझ में ही नहीं आता था। मैं
नियमित कॉलेज नहीं जाता था फिर भी भारतीय विद्यापीठों में एकस्तरनल हिंदी के संबंध में सभी जानकारियाँ प्राप्त कर ली थी। यही कारण है कि मैं ने इंटर आई की परीक्षा वाराणसी और बी.ए. की परीक्षा पुणे में दी। इस दौरान ओलियास फ्रॅंसीस एवं राष्ट्रवाणी प्रधान समिति के छोटे-मोटे कोर्स भी कर दिए। इसके अतिरिक्त सातवें संगीत का अभ्यास करते हुए मैं ने पपकीता के कोर्स में भी प्रवेश लेने में संकोच नहीं किया। इसे करने में मैं ने आगा-पीछा कुछ नहीं देखा। इस सब बातों में मेरी खूब जिज्ञासा रहती थी। मैं प्रातःकाल में रोगीरियल हॉल में ने कुछामूर्तियों से अपने कौशल के समाधान के लिए तथा सार्वजनिक बी के। कृष्ण मेनन गोपा पर क्या बोलते हैं, यह सुनने के लिए सुंदरबाय हॉल में चला जाता था। ये सब बातें बताने का प्रयोजन इतना ही है कि इस दौरान मेरे कोई पता नहीं कितनी लड़कियाँ और आंदोलके आई, इस का कोई हिस्सा नहीं। मेरी किस्मत ही ऐसी है कि मुंबई सोर्ट ट्रेस्ट में प्रथेक दिन लघुभाषा 150 लड़कियों मेरे इर्द-गिर्द चकर लगाती थीं और मैं उन के सुख-सुख में भागीदार भी होता था। यह सब देख कर मेरे समय नुकसान से चार्च करते थे। ये सभी को आज शायद हो गई है और वे अपने-अपने बच्चों की शादी की तैयारी भी करने लगे हैं। अब भी वे मुझे से जलते हैं, लेकिन मैं उन से प्रेम करता हूँ। जब उन में से कोई हर हिन्दी विभाग चलाती है तब मुझे चार्च के इस वक्त की याद आती है — “मैंने ऐंड वाइफ कपल दुनेदर फोर द सेक ऑफ़ स्टाइफ” — मर्द-औरत सिर्फ़ झुकाकर करने के लिए इकड़ा होते हैं।

किसी भी परिस्थिति के कारण जो लड़कियों कुंजारी रहती हैं, उन की दशा कैसी होती है, इस की कल्पना मैं नहीं कर सकता। इसलिए मेरी दृष्टि से यह बहुत अच्छी नज़र होती है कि मैं ने इस के लिए अपने पति की सहायता में राहत की चुनौती में बचने के लिए कुछ नहीं दिया। इसका तादाद मेरे कुंजारी का होना चाहिए न कि मर्द का। आदमी को कुंजारी रहना चाहिए, और इस ने मेरे माता को बेजमानियों के पुरा किया है। एक सेमिनार में लेखक इस बात का सघनितकरण करते हुए कहता है कि लड़कियों के अपने से अधिक उच्च शिक्षा की जरूरत है। और कुछ प्रसंगों में सलाह लेने के लिए इस को एक और महत्त्व की ज़रूरत होती है। मर्द की बात और है। शादी की इतनी छोटी-सी आँखों की कल्पना करते हैं, इस का समझ शादी के बाद ही आता है।" तब "ओल्ड बैक्लर" में विलियम कांग्रीस क्या कहता है, उस की याद आती है: "जबली में शादी कीते और आरम्भ से परस्ताता कीते।" ये सब सच होने के बाद भी आप मुझे यह प्रश्न पूछते हैं कि इसी कसरत लड़कियों के परिचय देने के तरीके भी आप प्रमित में कितने नहीं पक्षी? मैं आप के इस समाल का जवाब देता हूँ कि मैं फैसा नहीं ऐसा नहीं कह सकता। प्रेम किया तेज़ी से मैं दूल्हा नहीं। मैं मुंबई की जिस चार्ट में रहता था वहाँ सब तरह के लफज़े़े चलते रहते थे। मेरे माता और पिता के लिए सख्त रहने और तेज़ी में रुचि रखने थे। उस को बसा करने के लिए मेरे एक समय बिधि के सदस्य के एक वाचनालय का सदस्य बन गया और अपनी बहन के माध्यम से उस को किताबें
भेजने लगा। लेकिन इस का परिणाम विपरीत ही हुआ। उस मित्र को पुस्तक देने के बजाय वह मुझे मेरे कमरे में अकेला देख कर पुस्तक वापस करने के लिए मेरे पास आने लगी। इस तरह दिन-प्रतिदिन परिवर्तन बढ़ता गया और यह बात उस के माता-पिता के ज्ञात हो गई पर उन्होंने अंदर मुंडे ली। हम दोनों प्रत्येक दिन मलाबार हिल, चौपाटी और कभी-कभी उन के परिवार के साथ सिनेमा भी देखने जाने लगे। प्रेमी में जीवन में गांधी, विनोबा, बाबासाहेब और दादा धर्मधिकारी आदि जैसे पवित्र विचारक आए।

परिणाम-स्वरूप मैं ने आदर्श प्रेम की बात की, लेकिन उस को और उस के माता-पिता को व्यवहार चाहिए था। उन के सुयोग से उन के ही पड़ोस की याद में एक लड़का मिल गया जो कि कलक्ता में अधिकारी था। माता-पिता ने उचित ढंग से विवाह का प्रस्ताव रखा। दूसरे ने उसे स्वीकार किया। उस लड़की ने सोचा कि शायद मुझे बुरा लगेगा, इसलिए वह अनुमति लेने के लिए मेरे पास आई तो मैं ने सहर्ष हो गई। इतना ही नहीं, बल्कि मैं ने उस की शादी में उसे एक अच्छा उपहार भी भेंट किया और स्वयं उपस्थित भी हुआ। अब भी हमारे बीच स्थान उसी तरह है। मैं अभी तक कलक्ता नहीं गया, लेकिन जब भी वे इतर आते हैं, वे दोनों हमारे यहाँ उठते हैं।

निष्कर्ष : विवाह संस्था एक ऐसी संस्था है जिस में जो भीतर है वह बाहर, और जो बाहर है वह भीतर आना चाहता है। मुझे इस का पूरा अनुभव है। इसलिए मैं उस की चौखट पर ही रहा।